B. A. II - Sem IV

Paper - C - 8

History of West Asia

सीरिया एवं लेबनान और द्वितीय विश्व युद्ध

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद सीरिया और लेबनान के गणराज्य पर फ्रांस का संरक्षण कायम हुआ। लेकिन सीरिया वाले फ्रांस की संरक्षणता के विरुद्ध थी। मार्च 1920 में सीरिया वालों ने सीरियन कांग्रेस का आयोजन किया, जिसमें एक प्रस्ताव पास करके फ्रांसीसी संरक्षण का भारी विरोध किया। सन् 1920 ई० से 1936 ई० तक फ्रांसीसियों की औपनिवेशिक अभिलाषा और अरबों की राष्ट्रीय अभिलाषा में संघर्ष होता रहा।

फ्रांस संरक्षण के प्रारंभिक काल में ही क्षेत्र संरक्षण को दो भागों में विभाजित कर दिया था - सीरिया और लेबनान।

लेबनान पर फ्रांसीसियों की विशेष कृपा थी क्योंकि इसके बहुसंख्यक निवासी अरब ईसाई थे, जो फ्रांसीसियों का समर्थन करते थी। 1925 ई० में लेबनान के लिए विधान बनाया गया जिसके अनुसार वहां संसदीय शासन की व्यवस्था लागू की गई। सीरिया का कुछ भाग काटकर लेबनान में मिला दिया गया, परिणामस्वरूप इसका क्षेत्रफल बड़ा हो गया।

Scanned with CamScanner

इस वृहत्तर लेबनान में बेरुत, त्रिपोली, सिडान और टायर नामक समुद्रतटवर्ती शहर थे। अब नया लेबनान पहले से दुगुना हो गया।

वृहत्तर ~~सीरिया~~ के लेबनान के निर्माण से सीरिया में देशव्यापी विद्रोह हुआ। क्योंकि इससे उनकी अर्थव्यवस्था अव्यवस्थित हो गई थी। फ्रांसीसियों ने सीरिया को पृथक-पृथक राज्यों में बाँट दिया। उनके दो ~~टेल~~ लटाकिया और जेबलड्रूज को अपने प्रत्यक्ष शासन में रखा। उत्तर में स्थित एलेक्जेंड्रिटा तुर्की का स्वायत्तशासित प्रदेश बन गया। इस विभाजन के कारण सीरिया में कई जगह स्थानीय विद्रोह होने लगे। फ्रांसीसियों का भी दमन चरमोत्कर्ष पर था। इसी समय सीरिया की राजनीति पर पड़ोसी देशों की राष्ट्र नीति का असर पड़ा। सन 1933 ई० की आंग्ल-इराकी संधि के नमूने पर फ्रैंको-सीरियन संधि वार्ता हुई। इस संधि के अनुसार सीरिया की सुरक्षा और विदेश नीति पचीस वर्षों तक फ्रांस के नियंत्रण में रहती थी। इसमें आंतरिक प्रभुसत्ता एवं ~~क्षेत्रीय~~ एकता के सिद्धांतों की अवहेलना की गई।

सीरियाई राष्ट्रवादियों ने इसका घोर विरोध किया। सीरिया संसद ने भी इसका अनुमोदन नहीं किया। अंततः ~~फ्रांसीसी~~ अधिकारियों ने अनिश्चितकाल के लिए संसद को भंग कर दिया तथा संविधान को निरस्त कर दिया।

फ्रांसीसी संरक्षण के विरुद्ध 1936 ई० में भी भयानक विद्रोह हुआ। फ्रांस की सरकार के लिए शासन कार्य चलाना मुश्किल हो गया। फ्रांसीसी हाई कमिश्नर काउन्ट डी० मार्टेल ने सीरियाई प्रतिनिधिमंडल हाशिम-के-अल-अताशी को संधिवार्ता के लिए पेरिस आमंत्रित किया। 9 सितम्बर 1936 ई० को दोनों देशों के प्रतिनिधियों ने संधि-वार्ता पर हस्ताक्षर किए। सीरिया को राष्ट्रसंघ का सदस्य बनाया जाना तथा 3 वर्षों के अन्दर स्वतंत्रता दे दी जाने की बात कही गई। सीरिया में लटाकिया और जेबलड्रूज शामिल करने की बात कही गई। फ्रांस को सीरिया में दो वायु अड्डे रखने का अधिकार मिला। इसके अलावा लटाकिया और जेबलड्रूज में पाँच वर्षों तक वह स्थल सेना भी रख सकता था। सेना के प्रशिक्षण, शिक्षा एवं उद्योग के क्षेत्र में फ्रांस से सहायता लेने की बात कही गई। फ्रेंच राजदूत को सीरिया में सभी राजदूतों से ऊपर स्थान मिलना तय हुआ। इस संधि के तुरंत पश्चात् 1936 ई० के अन्त में सीरिया में आम निर्वाचन हुआ, जिसमें राष्ट्रवादियों की विजय हुई। हाशिम-अल-अताशी नए राष्ट्रपति निर्वाचित हुए और जमील-मर्दन-बे प्रधान मंत्री बने।

द्वितीय विश्वयुद्ध के अवसर पर फ्रांस को राष्ट्रीय सुरक्षा पर खतरे की आशंका दिखने लगी। अतः फ्रांस ने ~~संधि~~ संधि के अनुमोदन में तटस्थता दिखलाई। सीरिया के विखंडन की नीति पर राष्ट्रवादी उपद्रव पुनः प्रारंभ हो गए। अंततः 7 July 1939 को

सीरिया के राष्ट्रपति हाशिम - अल - अतासी ने अपना पदत्याग कर दिया। सीरिया की संसद भी भंग कर दी गई। अब फ्रांसीसी हाई कमिश्नर ~~गैब्रियल~~ गैब्रियल प्यो (Gabriel Pueaux) ने दमनात्मक रवैया अपनाया। उसने संविधान को स्थगित कर दिया, व्यवस्थापिका को भंग कर दिया और अपने अधीन देशों में शासन के लिए कौंसिल की व्यवस्था की। इसके साथ ही जेबलड्रूज तथा लटाकिया में प्रत्यक्ष शासन की व्यवस्था कर शासन अपने हाथ में ले लिया।

सितम्बर 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध के आरंभ होने के बाद लेबनान में भी यही प्रक्रिया दुहराई गई। लेकिन यहाँ राष्ट्रपति को अपने स्थान पर रहने दिया गया और मंत्रिमंडल के स्थान पर एक राज्य सचिव नियुक्त किया गया जिसे हाई कमिश्नर के आदेशों का पालन करना था।

इस प्रकार सीरिया तथा लेबनान पर फ्रांसीसी शिकंजा मजबूत हो गया। युद्धकाल में स्वतंत्रता आंदोलन को अवैध घोषित किया गया तथा एक विशाल फ्रेंच फौज जेनरल वैगांड की अध्यक्षता में सीरिया में रख दी गई।

लेबनान में भी ऐसी ही कड़ी कार्रवाई की गई। लेबनान का संविधान खत्म कर दिया गया और संसद भंग कर दी गई।

महायुद्ध में जब फ्रांस की हार हो गई तब उसकी सारी योजनाएं विफल हो गई। अब

अब सीरिया और लेबनान फ्रांस के शासन मार्शल पेतों (Marshal Petain) की नई विशी सरकार (Vichy Govt) का नियंत्रण में आ गई। यह जर्मन की कठपुतली थी। विशी सरकार ने जर्मन हवाई जहाजों को सीरियाई हवाई अड्डे पर उतारने की आज्ञा दे दी। इस पर ब्रिटेन ने हस्तक्षेप किया। सीरिया के दगाल सरकार ने विशी सरकार के विरुद्ध आंदोलन किया। युद्ध के समय सीरिया वाले अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते रहे। अन्ततः 1944 ई० में फ्रांस ने सीरिया और लेबनान दोनों को स्वतंत्र कर देने की बात मान ली। इस प्रकार युद्धकाल में ही इन दोनों देशों की आजादी का मार्ग प्रशस्त हो गया।

द्वितीय युद्ध की के अन्त होते ही मई 1945 में बहुत से फ्रांसीसी सैनिक बेरूत में उतार दिए गए। इससे सीरिया-लेबनान दोनों देशों में सनसनी फैल गई। दंगे शुरू हो गए। ब्रिटेन ने इसका विरोध किया और दगाल को शांति स्थापित करनी पड़ी। सिद्धान्ततः सीरिया और लेबनान की स्वतंत्रता मान ली गई। सोवियत रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका ने नए गणराज्य को मान्यता दे दी लेकिन इनकी भूमि पर अभी विदेशी सेना थी। अतः मामले को 4 feb 1946 में सुरक्षा परिषद में ले आया गया। सुरक्षा परिषद के पहल के बाद 1946 ई० के अंत तक सारी सेनाएँ हट गईं। इस प्रकार वर्षों प्रयास के बाद इन्हें मुक्ति मिली तथा अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में ये दो स्वतंत्र सदस्य के रूप में उदित हुए।